म.प्र. में सरदार सरोवर बांध परियोजना से पुनर्वासित गाँवों की पुनर्वास के पूर्व एवं पश्चात् में पर्यावरणीय स्थिति का मूल्यांकन

डॉ. सखाराम आर. मुजाल्दे
सि. लेक्चरर,
स्कूल ओफ इकोनोमिक्स, डी.ए.वी.वी. इन्दोर

१. प्रस्तावना

स्वतंत्रता के बाद हमारे पूर्व स्व. प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने पंचवर्षीय योंजनाओं के माध्यम से विकास के नये आयाम शुरू किये, जिसे नेहरू मॉडल ऑफ डेवलपमेंट के रूप में जाना जाता है। नेहरू डेवलपमेन्ट (विकास) के अन्तर्गत कृषि उत्पादन बढ़ाने हेतु बड़े बाँध कर निर्माण, आधुनिक तौर तरीके अपनाने तथा वृहद उद्योगों की स्थापना के माध्यम से अर्थव्यवस्था को मजबूत आधार देने का प्रयास था। यही वजह है कि नेहरूजी विकासोन्मुख ;डवकमस क्मअमसवचउमदज व्तपमदजमकद्ध व्यक्ति माने जाते थे। नेहरू डेवलपमेन्ट ने स्वतंत्रता पश्चात कृषि के लिये सिंचाई व्यवस्था हेतु वृहद भाँखडा नाँगल बाँध परियोंजना तथा दामोदर घाटी परियोजना प्रारम्भ की। इन बड़े बाँधों के सन्दर्भ में नेहरूजी द्वारा कहा गया कि ये आधुनिक भारत के ''विकास के मन्दिर'' है। चूँकि जब बड़ें बाँधों का निर्माण शुरू हुआ तो भूमि विशिष्ट के अनिवार्य अर्जन की आवश्यकता महसूस हुई। जिसके कारण प्राकृतिक संसाधनों के स्वामी परिवारों को अपने पैतृक स्थान से मजबूरन विस्थापित होना पड़ा एवं विस्थापन की पीड़ा बड़े बाँध के नकारात्मक पहलू के रूप में सामने आयी।

नर्मदा नदी पर निर्माणाधीन सरदार सरोवर बाँध की ऊँचाई 121.92 मीटर करने स कुल 24 हजार 421 परिवार प्रभावित हैं, बाँध की विवाद से पहले की ऊँचाई 110 मीटर थीं, बाँध की ऊँचाई बढ़ाने से मध्यप्रदेश के 177 गाँव डूब क्षेत्र में आ रहे हैं। सरदार सरोवर बाँध से कुल तीन राज्यों के 231 गाँव विस्थापित होंगे जिनमें सबसे अधिक मध्यप्रदेश राज्य के 192 जो कुल विस्थापित गाँवों का 83.11 प्रतिशत है, कुल 231 गाँवों के करीब 45 हजार परिवारों के लगभग 2.5 लाख से अधिक लोंगो का विस्थापन होना है। 12000 परिवारों के खेत व घर डूब चुके हैं। बाँध में 13.700 हेक्टेयर जंगल और लगभग इतनी ही कृषि योग्य भूमि डूबेगी।[1] इस प्रकार देखा जाए तो मानवीय विस्थापन एक कंगाली को जन्म देता है, जिससे मानव समाज अस्त–व्यस्त हो जाता है, कई स्थानों पर मुआवजे की राशि तो प्रदान कर दी जाती है लेकिन इन पिछड़े लोगों का भावी जीवन क्या, कैसा होगा? कहाँ जाकर पुनर्वास करगे? इसकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता है, व प्रभावित लोंगो को स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है। जिससे ये लोंग अपने आपको असहाय महसूस करने लगते हैं, व इन लोंगो के चारों तरफ कठिनाई ही कठिनाई नजर आने लगती है। अतः विस्थापन एवं पुनर्वास ने इन गरीब लोंगो की टूटी–फूटी अर्थव्यवस्था को पूरी तरह छिन्न–भिन्न करके रख दिया है, अधिकांश लोंग बेरोजगार एवं बेकार हो जाते हैं। इस प्रकार इन पुनर्वासित व विस्थापित लोंगो की पूर्व व वर्तमान स्थिति इनकी सामाजिक तथा पर्यावरणिय स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित अध्ययन करना नितान्त आवश्यक है। स्वस्थ्य जीवन यापन के लिये हमारे आसपास का वातावरण बहुत ही हद तक जिम्मेदार होता है। इस प्रकार हमारे आसपास के वातावरण का अच्छा अतिआवश्यक हैं। सरदार सरोवर बाँध से विस्थापित होने वाले परिवारो को विस्थापन के पश्चात् पुनर्वासित किये गये पुनर्वास स्थल पर उपलब्ध वातावरण एवं पर्यावरण स्थिति का मुल्यांकन प्रस्तुत शोध में किया गया है। जिनमें विस्थापित परिवारो को आवंटित पुनर्वास स्थलों पर पेयजल सुविधा, पुनर्वास स्थल के आसपास पौधरोपण की स्थिति, आवास हेतु आवास की संरचना, पशुओं की चराई व्यवस्था, पुनर्वास स्थल से जंगल की दूरी, गाँव में पहुच हेतु मार्ग की स्थिति आदि तथ्यों के आधर पर पर्यावरणीय स्थिति का मुल्यांकन प्रस्तुत शोध में किया गया है।

२. संबंधित साहित्य का अध्ययन से प्रमुख साहित्य का विवरण

हसनैन नदीम (2001) ने अपनी पुस्तक में लिखा ह कि विकास और विस्थापन के मामले में प्रभावित होने वालों की बड़ी संख्या स्पष्टतः जनजातियों और उन लोगों की है, जो ग्रामीण क्षेत्रों की सीमान्त पर

सदियों से प्राकृतिक संसाधनों पर आश्रित थे। विकासात्मक विस्थापन के फलस्वरूप आज ये पंगु और लाचार हो गये है । जिसे एक कंगाली पूर्ण प्राकृतिक वातावरण में ठगे से रहकर जीवनयापन करने पर मजबूर हो गये हैं व शासन भी इसकी सुधि न लेकर विकास की बाते कहकर विस्थापितों को और गर्त में उड़ेल रहा है।[2] **मुकेश कुमार झा (2002)** ने अपने शोध में लिखा है कि भाखड़ा बांध जिसे ''आधुनिक युग का मंदिर'' कहा जाता है, बड़े बांधों के विरोधियों के सामने एक चमकीली मिसाल की तरह पेश किया जाता है। आज के पंजाब, हरियाणा में कथित समृद्धि लाने वाले इस बांध की गाथा पूरे देश में सुनी सुनाई जाती है। नए भारत की इस कथित तीर्थ के अभिशाप को विस्थापन की तरह मांगने वाले लोगों की क्या हालत हुई? वे कहाँ गये ? इसका सुध लेने वाला कोई नहीं है। सरकार की तरफ से कोई कारगर कदम न उठाने से यह स्थिति आज बन गई है।[3] **मोदी अनुराग (2002)** ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है कि विकासात्मक योजनाआ के चलते प्रत्येक राज्य में ऐसे लाखों आदिवासी हैं, जिनके पास वन भूमि का पट्टा नहीं है तथा सरकार के नियमों के चलते उन्हें कभी भी पट्टा नहीं मिल सकता है। यही कारण है कि पट्टे के अभाव में विस्थापित होने वाले आदिवासियों को भूमि के बदले में मुआवजा कम मिलता है जिससे प्राचीनकाल से जंगलों व पहाड़ों की ओर भागने वाले आदिवासी आज भी शासकीय नीतियों के चलते भागते चले जा रहे हैं।[4] **परशुमन (1996)** ने अपने अध्ययन में पाया परियोंजना द्वारा लोंगो की सामाजिक आर्थिक स्थिति बिखर जाती है जिसके लिए पुर्नसमायोजन एवं पूनर्वास कार्यक्रम का लगातार निरीक्षण एवं मूल्यांकन करने पर बल दिया है।[5]

३. अध्ययन के उद्देश्य

1. पुनर्वासित गाँवों में विस्थापित परिवारों को प्राकृतिक संसाधनों विशेषतः भूमि, पानी एवं वन की उपलब्धता एवं उसके दोहन कि स्थिति का पर्यावरणीय मूल्यांकन करना ।
2. सरदार सरोवर बाँध से पुनर्वास में होने वाली विभिन्न बाधाओं और समस्याओं का अध्ययन करना एवं पुनर्वास संबंधित नीतिगत एवं व्यवहारगत सुझाव देना।

४. शोध प्रविधि

नर्मदा नदी पर निर्माणाधीन सरदार सरोवर बाँध परियोजना से बाँध कि ऊँचाई 121.92 मीटर करने से मध्यप्रदेश के कुल 192 गाँव प्रभावित एंव विस्थापित हुए है। जो कि सरदार सरोवर बाँध परियोंजना से होने वाले सम्पूर्ण विस्थापित एवं प्रभावित गाँवो का 83.11 प्रतिशत है। परियोंजना से होने वाले विस्थापन में विस्थापित होने वाले कुल परिवार 24421 है, जिसमें सर्वाधिक 18985 परिवार मध्यप्रदेश में बसने वाले परिवार है, जो कुल विस्थापित परिवारों 77.74 प्रतिशत है। कुल विस्थापित परिवारों में से गुजरात में बसने वाले परिवार 5456 है, जिनका प्रतिशत 22.34 है। इस परियोंजना के कारण मध्यप्रदेश में कुल 192 गाँवों के निवासियों को 75 नव विकसित पुनर्वासित गाँवों में पुनर्वासित किया गया है।[25] अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश के कुल 192 पुनर्वासित गाँवों मे से 20 गाँवों का चयन निदर्शन विधि से किया गया है। गाँवों के चयन के पश्चात् प्रत्येक गाँव से 20–20 विस्थापित परिवारों का चयन दैव निदर्शन पध्दति से चयन किया गया है। इस तरह अध्ययन हेतु कुल 400 ग्रामीण परिवारों का चयन किया गया है। इन परिवारों कि आय, सामाजिक व्यवसायिक स्थिति, रोजगार की स्थिति, सरकारी सुविधाओं एवं मुआवजें कि आबंटन संबंधी जानकारी एवं विस्थापित परिवारों को उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं एवं अन्य समस्याओं से संबंधित आँकडों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है।

५. विस्थापन के पूर्व एंव पश्चात् में विस्थापित परिवारो के मकान का स्वरूप का विश्लेषण

सरदार सरोवर बाँध परियोजना से विस्थापित एवं प्रभावित परिवारो के मकान के स्वरुप से संबंधित जो तथ्य सर्वेक्षण से प्राप्त हुए है, उनका विश्लेषण अग्र ता. क्र. 1 में किया गया है।

ता. क्र. 1 विस्थापन के पूर्व एंव पश्चात् में विस्थापित परिवारो के मकान का स्वरूप

मकान का स्वरूप	विस्थापन के पूर्व परिवारों की संख्या	प्रतिशत	विस्थापन के पश्चात् परिवारों की संख्या	प्रतिशत
कच्चा	221	55.25	9	2.25
पक्का	26	6.5	166	41.5
कच्चा – पक्का	153	38.25	225	56.25
योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

उपरोक्त ता. क्र. 1 में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात विस्थापित परिवारो को उनके मकान के स्वरुप आधार पर वर्गीकृत विश्लेषित किया गया हैं। विश्लेषण से स्पष्ट है कि विस्थापन के पूर्व सर्वाधिक 55.25 प्रतिशत परिवारो के मकान कच्चे थे। जिन परिवारो के मकान पक्के बने थे, वे परिवार केवल 6.5 प्रतिशत थे। इसी प्रकार कच्चे एवं पक्के मकान वाले परिवार 38. 25 प्रतिशत परिवार थे। लेकिन विस्थापन का इन विस्थापित परिवारो के मकान के स्वरुप पर काफी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। जिसके कारण विस्थापन के पश्चात् पक्के मकान वाले परिवारो की संख्या 41.5 प्रतिशत हा गयी है। इसी प्रकार कच्चे–पक्के मकान वाले परिवार 56.25 प्रतिशत हो गये है। विस्थापन के पूर्व सर्वाधिक संख्या कच्चे मकान वाले परिवारो की थी, जो विस्थापन के पश्चात् इनकी संख्या 2.25 प्रतिशत रह गयी है। अतः विस्थापन के पश्चात् लगभग समस्त परिवारो के मकान की स्थिति बहुत अच्छी हो गयी है। विस्थापित परिवारों के विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् मकान के स्वामित्व की स्थिति को विश्लेषित किया गया । विश्लेषण से स्पष्ट हुआ है कि विस्थापन के पूर्व सर्वाधिक 99.5 प्रतिशत परिवारो का स्वंय का मकान था। मात्र 2 परिवार किराये मकान में रहते थे। विस्थापन के पश्चात् समस्त परिवारो का सवंय का मकान है। अतः विस्थापन के पश्चात् सभि परिवारो ने अपना मकान बना लिया है।

६. विस्थापित गाँवों में विस्थापन के पूर्व एवं विस्थापन के पश्चात् जल स्त्रोतों की स्थिति का विश्लेषण

प्रथ्वी पर जीवन संभव तभी ही है, जब जल है। इसी कारण कहा जाता है कि भजल ही जीवन है।" तथा विस्थापित गाँवो में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में उपलब्ध जल साधनो की स्थिति के संबंध में जो तथ्य प्राप्त हुए है, उन्हें अग्र ता. क्र. 2 में दर्शाया गया है।

ता. क्र. 2 विस्थापित गाँवों में विस्थापन के पूर्व एवं विस्थापन के पश्चात् जल स्त्रोतों की स्थिति

जल स्त्रोतों की स्थिति	विस्थापन के पूर्व परिवारों की संख्या	प्रतिशत	विस्थापन के पश्चात् परिवारों की संख्या	प्रतिशत
कुआ	134	33.5	43	10.75
नदी	262	65.5	41	10.25
नल	4	1.0	316	79.0
योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

ता. क्र. 2 में विस्थापित गाँवों में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् गाँवों में उपलब्ध जल स्त्रोतों की स्थिति को विश्लेषित किया गया हैं। तालिका के विश्लेषण स्पष्ट है कि विस्थापन के पूर्व में जिन गाँवों में जल स्त्रोत के रुप में कुएँ एवं नदी उपलब्ध थे उन गाँवो की संख्या सर्वाधिक 33.5 एवं 65.5 प्रतिशत थी। परंतु विस्थापन के पश्चात् गाँव में जल स्त्रोत के रुप में कुएँ एवं नदी उपलब्ध होने वाले परिवारों की संख्या कम होकर 10.75 एवं 10.25 प्रतिशत रह गयी हैं। जिनके स्थान पर विस्थापन के पश्चात् जल स्त्रोत रुप में हैंण्डपम्प उपलब्ध वाले परिवारों की संख्या बढ़कर सर्वाधिक 79 प्रतिशत हो गई है। जिनकी संख्या विस्थापन के पूर्व में मात्र 1 प्रतिशत थी। अतः विस्थापन के पश्चात् हैंण्डपम्प प्रमुख रुप से जल का साधन होने का कारण शासन द्वारा जल साधन के लिये विस्थापित गाँवो में नये हैंण्डपम्प करवाना हैं। विस्थापित परिवारों की विस्थापन से पूर्व एवं पश्चात् मे पानी पीने की व्यवस्था का विश्लेषण करने पर स्पष्ट हुआ है कि समस्त विस्थापित परिवार विस्थापन के पूर्व भी हैंण्डपम्प का पानी पीने के लिये उपयोग करते थे। एवं विस्थापन के पश्चात् भी हैंण्डपम्प का पानी ही पीने के रूप में उपयोग करते हैं इस तरह समस्त पूनर्वास स्थल पर पानी के पर्याप्त साधन उपलब्ध हैं। इस प्रकार विश्लेषण से स्पष्ट है कि विस्थापित गांवो में उपलब्ध जल स्रोतो पर विस्थापन का काफी नकारात्मक प्रभाव पडा है। जिसके कारण इन गांवो में विस्थापन के पूर्व उपलब्ध जल स्रोत कुओं एंव नदी वाले गांवो की संख्या में बहुत परिवर्तन होना है।

७. विस्थापित परिवारों की विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में पशुओं को पानी पिलाने की व्यवस्था का विश्लेषण

विस्थापित परिवारो के पास विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में उपलब्ध पशुओं को पानी पीलाने की व्यवस्था की स्थिति का विश्लेषण अग्र ता. क्र. 3 में किया गया है।

ता. क्र. 3 विस्थापित परिवारों की विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में पशुओं को पानी पिलाने की व्यवस्था

पानी की व्यवस्था	विस्थापन के पूर्व परिवारों की संख्या	प्रतिशत	विस्थापन के पश्चात् परिवारों की संख्या	प्रतिशत
कुआं	96	24.0	181	45.25
नदी	304	76.0	118	29.5
कोई साधन नही है	–	–	101	25.25
योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

ता. क्र. 3 में विस्थापित परिवारों के गाँव में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में पशुओं को पानी पीलाने के साधनों को विश्लेषित किया गया हैं। उपरोक्त तालिका विश्लेषण से स्पष्ट है कि विस्थापन के पूर्व में सर्वाधिक (76 प्रतिशत) वे परिवार है। जो पशुओं को पानी नदी पर पिलाते थे एवं इनका पशुओं को पानी पिलाने का साधन नदी था। कुओं पर जो लोग पशुओं को पानी पिलाते थे, उन परिवारों की संख्या 24 प्रतिशत थी। लेकिन विसथापन के पश्चात् इन परिवारों के पशुओं को पानी पिलाने के साधनो बडा परिवर्तन हुआ है। जिसके कारण विस्थापन के पूर्व सर्वाधिक 76 प्रतिश्त परिवारों का पशुओं पानी पिलाने का साधन नदी था। उन परिवारों की संख्या कम होकर 29.5 प्रतिशत रह गई है। एवंकुओं पर पशुओं को पानी पिलाने वाले परिवारों की संख्या बढ़कर 45.25 प्रतिशत हो गई है। साथ ही विस्थापन के पश्चात् जिन परिवारों के गाँवो में पशुओं पानी पिलाने का कोई साधन नही है। वे परिवार विस्थापन के पश्चात् पशुओं को घर पर ही पानी लाकर पिलाते है। अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि विस्थापन के पश्चात् इन परिवारों की पशुओ को पानी पिलाने के साधनों पर नकारात्मक प्रभाव पडा है। एवं इन्हें घर पर पानी लाकर पिलाना पड रहा है। जिसका कारण हैं पुनर्वास सथल पर पशुओं को पानी पिलाने की व्यवस्था ठीक नहीं हैं। विस्थापन ने इन परिवारो के पानी पीने के साधनों को बहुत क्षति पहुँचाई है, विस्थापन के पूर्व जहां लगभग समस्त परिवार परिवारो का पीने के पानी का स्रोत कुआँ एंव नदी था। परंतु विस्थापन के पश्चात् इनके पानी पीने के साधनों की स्थिति बहुत दयनीय हो गई है, जिसके कारण लगभग 26 प्रतिशत परिवारो के पशुओं को पानी पीलाने का कोई साधन नही है।

८. बाँध परियोजना से होने वाले विस्थापन के वस्थिापित गांवो बने तालाबों की संख्या के आधार पर विश्लेषण

विस्थापित गांवो में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् तालाबों की संख्या के संबंध में जो तथ्य प्राप्त हुए है, उन्हे ता. क्र. 4 में दर्शाया गया है।

ता. क्र. 4 विस्थापन के पूर्व एंव पश्चात् में विस्थापित गांवो में बने तालाबों की संख्या

गाँव में तालाब की संख्या	विस्थापन के पूर्व परिवारों की संख्या	प्रतिशत	विस्थापन के पश्चात परिवारों की संख्या	प्रतिशत
नही है	140	35.0	400	100.0
1	40	10.0	–	–
2	160	40.0	–	–
3	40	10.0	–	–
4	20	5.0	–	–
योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

उपरोक्त ता. क्र. 4 में विस्थापित परिवारों के गाँवों में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् मे तालाबों की संख्या के आधार पर वर्गीकृत कर विश्लेषित किया गया हैं। जिसमें विस्थापन के पूर्व 40 प्रतिशत गाँवों में 2–2 तालाब थे, तथा जिन गांवो में 1 व 3 तालाब बने हुए थे उन गांवो की संख्या 10–10 प्रतिशत थे। इसी

प्रकार 4 तालाब वाले गांव 5 पतिशत है। 35 प्रतिशत गांवो में विस्थापन के पूर्व एक भी तालाब नही है। विस्थापन के पश्चात् यह स्थिति बिल्कुल भिन्न है। विस्थापन के पश्चात् एक भी गांव में तालाब नही बना हुआ है। अतः विस्थापन का इन गांवो में उपलब्ध तालाबों की स्थिति को काफी प्रभावित किया है, जिसके कारण विस्थापन के पूर्व लगभग 65 प्रतिशत गांवो में तालाब बने हुए थे। परंतु विस्थापन के पश्चात् एक भी गांव तालाब नही है। जो कि इनके जल स्रोत का बहुत बडा नुकसान है।

९. विस्थापित एवं प्रभावित गाँवों में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् गांव में पहुँचने हेतु मार्ग की स्थति के आधार पर विश्लेषण

किसी भी गांव की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के विकास में उस गांव की भौगोलिक स्थिति का भी काफी योगदान होता है। जिसमें गांव से शहर की दूरी, गांव में पहुँच हेतु मार्ग की स्थिति आदि। जो की उस गांव के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। विस्थापित गांवो में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में पहुँच मार्ग की स्थिति के संबंध में जो महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए है, उन्हें अग्र ता. क्र. 5 में दर्शाया गया है।

ता. क्र. 5 विस्थापित एवं प्रभावित गाँवों में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् गांव में पहुँचने हेतु मार्ग की स्थति

मार्ग की स्थिति	विस्थापन के पूर्व परिवारों की संख्या	प्रतिशत	विस्थापन के पश्चात् परिवारों की संख्या	प्रतिशत
कच्चा	140	35.0	–	–
पक्का	260	65.0	379	94.75
अर्द्धपक्का	–	–	21	5.25
योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

उपरोक्त ता. क्र. 5 के अनुसार सरदार सरोवर बाँध परियोजना से मध्य प्रदेश के विस्थापित एवं प्रभावित होने वाले गाँवों में पहुँचने हेतु मार्ग की स्थिति को विश्लेषित किया गया हैं। विस्थापन के पूर्व गाँव में पहुँच हेतु कच्चे मार्ग वाले गाँवो की संख्या 35 प्रतिशत थी। जो विस्थापन के पश्चात् ऐसे गाँवो की संख्या एक भी नही है। विस्थापन के पूर्व में जिन विस्थापित गाँवो में पहुँचने हेतु पक्का मार्ग बना हुआ था, उन गाँवो की संख्या सर्वाधिक 65 प्रतिशत थी, उन गाँवो की संख्या विस्थापन के पश्चात बढ़कर 94. 75 प्रतिशत हो गई है। विस्थापन के पश्चात् पक्के मार्ग वाले गाँवो की संख्या बढ़ने का कारण यह है कि शासन ने समस्त विस्थापित स्थलों तक पहुच हेतु मार्ग पक्के बना दिये है। 5.25 प्रतिशत गाँव ऐसे जहाँ पहुच हेतु मार्ग अर्द्धपक्के है। उपरोक्त तालिका के विश्लेषण के पश्चात् यह स्पष्ट है कि विस्थापन के पश्चात् विस्थापित गाँवो के मार्ग की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। किसी भी गाँव की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के लिये गाँव तक आने–जाने की सुविधा की अहम् भूमिका होती है। जिसके कारण गाँव में निवास करने वाले लोगों का आर्थिक एवं सामाजिक जीवन को प्रभावित होता हैं।

१०. विस्थापित परिवारो के गाँवो में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में जलाने हेतु लकडी प्राप्ति के स्त्रोंत का विश्लेषण

परियोजना से विस्थापित परिवारो द्वारा विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् जलाऊ लकडी प्राप्त करने के स्त्रोंत के संबंध में जो महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए, उन्हें अग्र ता. क्र. 6 में दर्शाया गया है।

ता. क्र. 6 विस्थापन के पूर्व एंव पश्चात् में जलाऊ लकडी स्रोत

जलाऊ लकडी लकडी प्राप्ती का साधन	विस्थापन के पूर्व परिवारो की संख्या	प्रतिशत	विस्थापन के पश्चात परिवारो की संख्या	प्रतिशत
जंगल से	92	23.0	88	22.0
जंगल एवं वन विभाग से	193	48.25	193	48.25
स्वंय की व्यवस्था थी	115	28.75	119	29.75
योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

ता. क्र. 9.6 में विस्थापित परिवारों कि जलाऊ लकड़ी की प्राप्त करने के स्त्रोंत के आधार पर वर्गीकृत कर विश्लेषित किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट है कि विस्थापन के पूर्व सर्वाधिक 48.25 प्रतिशत परिवार जंगल एवं वन विभाग से जलाऊ लकड़ी प्राप्त करते थे। विस्थापित परिवारो में 28.75 प्रतिशत ऐसे परिवार हैं, जिनकी जलाऊ लकडी का स्त्रोंत फसल कटने पश्चात् बचने वाली कपास की काड़ियो का उपयोग करते थे। 23 प्रतिशत वे परिवार है जो कि उप व्यवस्था के रूप में जंगल से लकड़ी प्राप्त करते थे। इस प्रकार इन परिवारो का जलाऊ लकड़ी का अपना स्त्रोंत था। परंतु विस्थापन के पूर्व 23 प्रतिशत परिवारो का जलाऊ लकड़ी प्राप्ति का स्त्रोंत जंगल ही था। विस्थापन के पश्चात विस्थापित परिवारो के जलाऊ लकड़ी पाप्ति के स्त्रोंतो में विशेष परिवर्तन नही आया है। जिस कारण विस्थापन के पश्चात् भी जंगल एवं वन विभाग से जलाऊ लकड़ी प्राप्त करने वाले परिवार विस्थापन पूर्व के परिवारो 48.25 प्रतिशत है। जिन परिवारो की जलाऊ लकड़ी की व्यवस्था स्वंय की है, वे परिवार 29.75 प्रतिशत है। साथ ही जंगल से जलाऊ लकड़ी प्राप्त करने वाले परिवार 22 प्रतिशत है। अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि विस्थापन के पश्चात् इप विस्थापित परिवारो के जलाऊ लकड़ी प्राप्ति के स्त्रोंत में खास परिवर्तन नही हुआ है।

११. विस्थापित परिवारो के गांवो में विस्थापन के पूर्व एंव पश्चात् आस–पास पौधारोपण की स्थिति का मूल्यांकन

बाँध परियोजना से विस्थापित होने वाले परिवारो के गांवो में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में आसपास पौध रोपण की स्थिति के संबंध में जो महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए है, उन्हें अग्र ता. क्र. 7 मे दर्शाया गया है।

ता. क्र. 7 विस्थापन के पूर्व एंव पश्चात् में गाँव के आस–पास पौधारोपण की स्थिति

हाँ /नही	विस्थापन के पूर्व परिवारो की संख्या	प्रतिशत	विस्थापन के पश्चात् परिवारो की संख्या	प्रतिशत
नही	240	60.0	340	85.0
हाँ	160	40.0	60	15.0
योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

उपरोक्त ता. क्र. 7 में विस्थापित परिवारो के गाँवो में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् आसपास पौधारोपण की स्थिति को विश्लेषित किया गया है। जिससे स्पष्ट है कि विस्थापन के पूर्व 60 प्रतिशत गांवो में पौधारोपण नही हुआ था। लेकिन विस्थापन क पश्चात् 85 परिवारों के गाँवो में पौधारोपण नही हुआ है। जिन गाँवों विस्थापन के पूर्व पौधारोपण हुआ था ऐसे गाँव 40 प्रतिशत हैं तथा विस्थापन के पश्चात जिन पुनर्वास स्थलों पर पौधा रोपण हुआ हैं ऐसे पुनर्वास स्थल मात्र 15 प्रतिशत है।

१२. विस्थापन के पूर्व एंव पश्चात् में पौधारोपण हुआ है, तो कितनी दूरी पर इस स्थिति का विश्लेषण –: विस्थापित एवं पुनर्वासित गांवो में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में अगर पौधा रोपण हुआ, तो कितनी दूरी पर इस संबंध में जो तथ्य प्राप्त हुए है, उहें अग्र ता. क्र. 8 मे विश्लेषित किया गया है।

ता. क्र. 8 विस्थापन के पूर्व एंव पश्चात् में पौधारोपण हुआ है, तो कितनी दूरी पर (कि.मी.में)

दूरी (कि.मी.में)	विस्थापन के पूर्व परिवारो की संख्या	प्रतिशत	दूरी (कि.मी.में)	विस्थापन के पश्चात परिवारो की संख्या	प्रतिशत
नही हुआ	240	60.0	नही हुआ	340	85.0
3 कि.मी. से कम	40	10.0	–	–	–
3 – 6	60	15.0	6	20	5.0
6 – 9	34	8.5	7	20	5.0
9 कि.मी. से अधिक	26	6.5	8	20	5.0
योग	**400**	**100.0**	योग	**400**	**100.0**

उपरोक्त ता. क्र. 8 में विस्थापित परिवारो के गाँव में विस्थापन के पूर्व एव पश्चात् में पौधा रोपण हुआ कि स्थिति को विश्लेषित किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट है कि विस्थापन के पूर्व सर्वाधिक 15 प्रतिशत परिवारो के गाँवो में पौधारोपण हुआ था। जो कि गांव से 3–6 कि.मी. दूर हुआ था। गाँव से 3 कि.मी से कम दूरी पर पौधारोपण होने वाले वाले गाँव 10 प्रतिशत है। इसी प्रकार जिन गांवो में विस्थापन के पूर्व 6–9 एवं 9 कि.मी से अधिक दूरी पर पौधारोपण हुआ था, उन गाँवो की संख्या 8.5 एवं 6.5 प्रतिशत है। विस्थापन के पूर्व 60 प्रतिशत गाँवो में पौधारोपण नही हुआ था। लेकिन विस्थापन के पश्चात् स्थिति इस प्रकार है कि जिन गाँवो में पौधारोपण विस्थापन के पश्चात् हुआ है, उनका प्रतिशत 15 है। जिनमें 3–6, 6–9 एवं 9 कि.मी से अधिक दूरी पर हुआ है। शेष 85 प्रतिशत गाँवो में पौधारोपण नही हुआ है। अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि विस्थापन के पश्चात् इन विस्थापित गाँवो में पौधारोपण नही हुआ है। जो कि शासन को अनिवार्य रुप से करना चाहिय।

१३. विस्थापित एवं प्रभावित परिवारों के गाँव से विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में जंगल की दूरी की स्थिति का विश्लेषण

विस्थापन से प्रभावित एवं विस्थापित होने वाले परिवारो में सर्वाधिक परिवार वे विस्थापित हुए है, जो ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले है। साथ ही सर्वाधिक परिवारो का मुख्य व्यवसाय कृषि है। इन परिवारो का मुख्य व्यवसाय कृषि होने के कारण इनका जंगल से पुराना नाता है, क्योंकी जंगल से ही इनका कृषि करने के लिये उपयोग किये जाने वाले औजार प्राप्त होते है। जंगल इन परिवारो का आय का भी एक साधन है, जिससे गोंद, तेंदू पत्ता व लकडी बेच कर बहुत सारे परिवार अपने जीवन का गुजारा करते है। इस प्रकार विस्थापित परिवारो के गाँव से विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में जंगल की दूरी के संबंध में जो तथ्य प्राप्त हुए है, उन्हें अग्र ता. क्र. 9 में दर्शाया गया है।

ता. क्र. 9 विस्थापित एवं प्रभावित परिवारों के गाँव से विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में जंगल की दूरी (कि.मी.में)

गाँव जंगल की दूरी (कि.मी.में)	विस्थापन के पूर्व परिवारों की संख्या	प्रतिशत	विस्थापन के पश्चात् परिवारों की संख्या	प्रतिशत
20 से कम	60	15.0	59	14.75
20 – 40	98	24.5	60	15.0
40 – 60	141	35.25	104	26.0
60 से अधिक	101	25.25	177	44.25
योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**
माध्य		**2.7075**		**2.9975**

ता. क्र. 8 के अनुसार प्रभावित एवं विस्थापित परिवारों के गाँवों से जंगल की दूरी को विश्लेषित किया गया हैं। जिसमें विस्थापन के पूर्व जिन गाँवो से 20 कि.मी. से कम दूरी पर जंगल था, उन गाँवो की संख्या 15 प्रतिशत थी। जबकी 20–40 कि.मी. दूर जंगल था, ऐसे गाँवो की सख्या 24.5 प्रतिशत थी। लेकिन विस्थापन के पश्चात् इन विस्थापित गाँवो से जंगल की दूरी बढ़ गई है। जिसके कारण विस्थापन के पश्चात इन गाँवो की संख्या कम होकर 14.75 एवं 15 रह गया है। विस्थापन के पूर्व में जहाँ 40–60 एवं 60 कि.मी. से अधिक दूरी पर जिन गाँवो में जंगल था, उनकी संख्या 35.25 एवं 25.25 थी। परन्तु विस्थापन के पश्चात् इन गाँवो की संख्या में भी काफी वृध्दि हुई है। विस्थापन के पूर्व इन विस्थापित गांवो जंगल औसत रुप से 47 कि.मी. दूर था, जो विस्थापन के पश्चात् औसत रुप से 53 कि.मी. दूर हो गया है। इस प्रकार विस्थापन के पश्चात् इन गाँवो जंगल बहुत दूर हो गये है। जो इनकी आय का एक अन्य (अतिरिक्त) स्त्रोत था।

१४. विस्थापित परिवारों की विस्थापन के पूर्व एवं विस्थापन पश्चात् पशुओं के चराने की व्यवस्था का विश्लेषण

ग्रामीण क्षेत्रो में वर्षा ऋतु में पशुओ को जंगल में ले जाकर चराने की व्यवस्था पायी जाती है अथवा अपने खेतो के आस–पास बनी मेढों पर ऊँगी हुई घास को काँट कर पशुओं खिलाया जाता है। जो उनकी स्वंय की व्यवस्था होती है। विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में इन विस्थापित परिवारो के पास

उपलब्ध पशुओ को चराने हेतु किस प्रकार की व्यवस्था है। इस संबंध में जो महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हूए है, उन्हें अग्र ता. क्र. 10 में दर्शाया गया है–:

ता. क्र. 10 विस्थापित परिवारों की विस्थापन के पूर्व एवं विस्थापन पश्चात् पशुओं के चराई की व्यवस्था

पशुओं के चराने की व्यवस्था की स्थिति	विस्थापन के पूर्व परिवारों की संख्या	प्रतिशत	विस्थापन के पश्चात् परिवारों की संख्या	प्रतिशत
जंगल में	43	10.75	43	10.75
स्वयं की व्यवस्था	357	89.25	357	89.25
योग	**400**	**100.0**	**400**	**100.0**

ता. क्र. 10 में विस्थापित परिवारों को विस्थापन के पूर्व एव पश्चात् गाँवो में उपलब्ध पशुओं को चराने की व्यवस्था को विश्लेषित किया गया हैं। जो तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि विस्थापित परिवारों की पशु चराई व्यवस्था में अधिक परिवर्तन नहीं हुआ हैं। विस्थापन के पूर्व 10.75 प्रतिशत परिवार जंगल में पशु चराते थे, एवं विस्थापन के पश्चात् भी इतने प्रतिशत परिवारों की पशुओ चराने की व्यवस्था जंगल ही हैं। शेष सर्वाधिक 89.25 प्रतिशत परिवार विस्थापन के पूर्व भी एवं पश्चात् भी पशुओं को चराने की व्यवस्था स्वयं कर लेते थे, वर्तमान में भी कर लेते हैं। तालिका विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि विस्थापन के पश्चात् भी इन परिवारों की पशु चराई व्यवस्था पर खास प्रभाव नहीं पड़ा।

१५. निष्कर्ष

सरदार सरोवर बाँध परियोजना से विस्थापित परिवारो के विस्थापन के पूर्व के गाँव एवं विस्थापन के पश्चात् इन परिवारो को आवंटित पुनर्वास स्थलों पर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनो जैसे मकान का स्वरुप, मकान का स्वामित्व, पानी, भूमि, वन आदि की वास्तविक स्थिति के मूल्याकंन हेतु इनसे संबंधित विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण उपरोक्त अध्याय में किया गया है। जिनमें विस्थापित परिवारों के मकान का स्वरुप, मकान का स्वामित्व, गाँव में पानी के स्रोत, पीने के पानी के स्रोत, गाँव में तालाब की संख्या, गाँव में पहुँचने के मार्ग की स्थिति, पौधा रोपण की स्थिति, गाँव से जंगल की दूरी एवं चराई की व्यवस्था तथा इन परिवारो के पास उपलब्ध गोबर गैस संयंत्र की स्थिति आदि संबंधित संकलित समंको का विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण से विस्थापित के विस्थापन के पूर्व गाँव में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन एवं विस्थापन के पश्चात् पुनर्वास स्थल पर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन की स्थिति के संबंध में जो महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए है। जा इस प्रकार है।

सरदार सरोवर बाँध परियोजना से विस्थापित एवं पुनर्वासित परिवारो के मकान के स्वरुप के संबंध में विश्लेषण करने पर पता चला है कि विस्थापन के पूर्व सर्वाधिक 55.25 प्रतिशत परिवारो के मकान का स्वरुप कच्चा था एवं 38.25 प्रतिशत परिवारो को मकान का स्वरुप कच्चा–पक्का था। विस्थापन के पश्चात् स्थिति बिल्कुल अलग है, विस्थापन के पश्चात् सर्वाधिक 56.25 प्रतिशत परिवारो के मकान का स्वरुप कच्चा–पक्का है एवं 41.5 प्रतिशत परिवारो का मकान पक्का हो गया है। साथ ही समस्त परिवारो का मकान का स्वामित्व स्वयं का है। इसी प्रकार विस्थापित परिवारो के विस्थापन के पूर्व एवं विस्थापन के पश्चात् गाँव में उपलब्ध पानी स्रोतो की स्थिति के संबंध में जो तथ्य प्राप्त हुए उनसे स्पष्ट होता है कि विस्थापन के पूर्व सर्वाधिक 65.5 प्रतिशत गाँवों में पानी का मुख्य स्रोत नदी थी जिसके कारण ये परिवार विस्थापित हुए है। 33.5 प्रतिशत गाँवों में पानी का सधन कुआँ था। लेकिन विस्थापन के पश्चात् सर्वाधिक 79 प्रतिशत परिवारो के गाँवों में पानी का साधन हैण्डपम्प है एवं 10.75 तथा 10.25 प्रतिशत परिवारो का पानी का साधन कुआँ एवं नदी है। परंतु ये समस्त विस्थापित परिवार विस्थापन के पहले एवं बाद में भी पीने के लिये हैण्डपम्प के पानी का ही उपयोग करते थे। तथा पशुओ पानी ये परिवार विस्थापन के पूर्व नदी पर पिलाते थे, जो विस्थापन के पश्चात् कुओं एवं घर पर ही पानी पिलाते है। इसी प्रकार इन विस्थापित गाँवों में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में उपलब्ध तालाबों की संख्या को विश्लेषित करने पर स्पष्ट हुआ है कि विस्थापन के पूर्व 40 प्रतिशत गाँवों में 2–2 तालाब थे, एवं 35 प्रतिशत गाँवों में एक भी तालाब नही था। लेकिन विस्थापन के बाद गाँवों में एक भी तालाब नही है।

विस्थापित गाँवों में पहुचने हेतु मार्ग कि स्थिति विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में विश्लेषण करने पर यह पाया गया है कि विस्थापन के पूर्व 35 प्रतिशत गाँवों में पहुचने का मार्ग कच्चा था एवं 65 प्रतिशत गाँवों में पहुचने का मार्ग पक्का था। लेकिन विस्थापन के बाद सर्वाधिक 94.75 प्रतिशत गाँवों का मार्ग पक्का हो गया है। इसी प्रकार विस्थापित गाँवों से जंगल की दूरी का विश्लेषण करने पर स्पष्ट हुआ है कि विस्थापन के पूर्व में सर्वाधिक 35.25 प्रतिशत गाँवों से जंगल की दूरी 40–60 कि.मी. थी, एवं 25.25 प्रतिशत परिवारो के गाँव से जगल 60 कि.मी. से अधिक दूर था। परँतु विस्थापन के पश्चात् इन विस्थापित गाँवों से जंगल 60 कि.मी. से अधिक दूर हो गया है ऐसे विस्थापित परिवार 44.25 प्रतिशत है। एवं जिन परिवारो के गाँव से जंगल 26 कि.मी है, वे 26 प्रतिशत है। लेकिन इन विस्थापित परिवारो की पशु चराई में विशेष परिवर्तन नही हुआ है एवं इनके लकड़ी प्राप्ति के साधनों में भी विशेष परिवर्तन नही हुआ है। विस्थापित गाँवों में पौधा रोपण की स्थिति को देखने पर पता चलता है कि विस्थापन के पूर्व सर्वेक्षित परिवारो के 40 प्रतिशत गाँवों में पौधा रोपण हुआ था, परँतु विस्थापन के पश्चात् मात्र 15 प्रतिशत गाँवों में ही पौधा रोपण हुआ है। इन समस्त तथ्यों के अलावा विस्थापित गाँवों में विस्थापन के पूर्व एवं पश्चात् में पहुँच मार्ग की स्थिति के मूल्याकंन से यह स्पष्ट होता है कि विस्थापन के पूर्व में 35 प्रतिशत परिवारो के गाँवों में पहुँचने का मार्ग कच्चा था, परंतु विस्थापन के बाद लगभग समस्त गाँवों में पहुंचने का मार्ग पक्का बन गया है।

संदर्भ

1. झा, मुकेश कुमार (2002). 'भाखड़ा बाँध के विस्थापितो'' देशबंधु प्रकाशन, रायपुर। 12 जून. पेज 5
2. मिश्र, नीरज (2006). इंडिया टूडे पत्रिका पेज नं. 24
3. मोदी, अनुराग (2002). आदिवासियों को जंगल से भगाने की साजिश, देशबंधु प्रकाशन, रायपुर। 7 अगस्त. पेज 86
4. हसनैन, नदीन (2001). 'जनजातीय भारत' जवाहर पब्लिशर्स, नई दिल्ली. पेज 212–215
5. Parasuram, S. (1996). "Methodology issues in Studies on Resettlement and Rehabilitation of Project Displaced People" The Indian Journal of Social Work Vol. 57 issue 2 April. ,pp 191-219